संस्कृति को लैंगिकता की शिक्षा का प्रभावी उपकरण बनाने हेतु सुझाव

संस्कृति लैंगिकता हेतु शिक्षा में किस प्रकार प्रभावी बन सकती है, इस हेतु सुझाव इन शब्दों दिये जा सकते हैं—

1. संस्कृति में व्याप्त दोषों को दूर किया जाना चाहिए।
2. शिक्षा के द्वारा संस्कृति के अच्छे गुणों की निरन्तरता तथा प्रसार का कार्य किया जाना चाहिए।
3. सांस्कृतिक सहिष्णुता के द्वारा।
4. शिक्षा के पाठ्यक्रम पर संस्कृति के प्रभावस्वरूप सांस्कृतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक महत्व के विषयों का समावेश करना।
5. संस्कृति का प्रभाव शिक्षण-विधियों पर पड़े जिससे तकनीकी तथा नवीन ज्ञान-विज्ञान की प्रगति होगी और लैंगिक भेदभावों में कमी आयेगी।
6. संस्कृति का प्रभाव अनुशासन पर पड़ता है, जिसमें भी वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप स्वानुशासन तथा सामाजिक अनुशासन की नींव डाली जाये, जिससे स्त्रियों और बालिकाओं के प्रति होने वाली उद्दण्डता में कमी आयेगी।
7. शिक्षण उद्देश्यों पर भी संस्कृति के प्रभाव को स्वीकार कर जनशिक्षा जिसमें स्त्री शिक्षा सम्मिलित है, का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए, जिससे स्त्रियाँ पुरुषों की बराबरी कर सकें।
8. विद्यालयी वातावरण तथा वातावरण पर सांस्कृतिक प्रभाव के परिणामस्वरूप विविध प्रकार के पाठ्यक्रमों, जिनमें बालिकाओं की रुचियों तथा कौशल विकास को प्रमुखता दी जायेगी, रखना चाहिए। आर्थिक रूप से स्वावलम्बी महिलायें समाज में आदर व सम्मान प्राप्त करती हैं।
9. वर्तमान प्रजातान्त्रिक विद्यालयों में शिक्षकों की भूमिका मित्र तथा पथ-प्रदर्शक की होती है। अतः शिक्षकों को उच्च आदर्शों, व्यक्तित्व तथा नैतिकता का विकास, जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, बिना किसी भेदभाव के सम्पन्न करना चाहिए।
10. भारतीय संस्कृति में भौतिक तथा आध्यात्मिक तत्वों का मणिकांचन संयोग वैदिक काल से ही चला आ रहा है। अतः शिक्षा के द्वारा भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान पर बल दिया जाना चाहिए जो पुरुष के लिए अकेले प्राप्य नहीं है। अतः इस प्रकार स्त्रियों को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार के कृत्यों में महत्व प्रदान किया जायेगा।

सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयास

सांस्कृतिक संरक्षण हेतु निम्नांकित प्रयासों की आवश्यकता है—

1. विद्यालयों में सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
2. व्यक्तियों में अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम तथा महत्व के बोध को जाग्रत कराना चाहिए।
3. विविधता में एकता के भाव को जगाना।
4. सांस्कृतिक संरक्षण हेतु देशाटन तथा भ्रमण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

5. सांस्कृतिक संरक्षण के लिए सांस्कृतिक महत्व की इमारतों और धरोहरों से अवगत कराना।
6. स्थानीय संस्कृतियों को फलने-फूलने के अवसर देने चाहिए।
7. सांस्कृतिक संरक्षण के लिए मेलों तथा सभाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।
8. सांस्कृतिक सरंक्षण हेतु सम्बन्धित संस्कृतियों के साहित्य तथा नवीन साहित्य रचनाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
9. टेलीविजन, रेडियो तथा सिनेमा, अखबार, पत्र-पत्रिकायें भी सांस्कृतिक आदान-प्रदान और संरक्षण में मुख्य भूमिका निभाती हैं।
10. कला तथा साहित्य से सम्बन्धित प्रदर्शनियों का आयोजन कराया जाना चाहिए।
11. सांस्कृतिक संरक्षण के लिए पाठ्यक्रम में तथा विद्यालयी क्रियाओं में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
12. परिवार, समाज तथा समुदायों को सांस्कृतिक संरक्षण के कार्य के लिए जागरूक करना चाहिए।

Scanned with CamScanner